Sri Dhumavati Kavach

Sumit Girdharwal & Sri Yogeshwaranand Ji
9410030994, 9540674788
shaktisadhna@yahoo.com
www.yogeshwaranand.org

श्री धूमावती कवचम्

।। दशांगों में मुख्य अंग ।।

अर्चन के दश अंगों में कवच भी एक मुख्य अंग है। जिस प्रकार राज्य-प्राप्ति के लिए किले, खाई, तोप, हथियार, रथ तथा धन आदि की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार सिद्धि (राज्य) पर विजय प्राप्ति के लिए भी इन सबकी आवश्यकता होती है। राजा (साधक) यदि कवच नहीं पहनेगा तो रण (मन्त्र-सिद्धि) में विजय प्राप्ति के स्थान पर पीठ दिखानी पड़ सकती है।

।। कवच की महत्ता ।।

साधना-काल में कवच किस प्रकार पहना जाता है? आदिगुरु शंकराचार्य जी कहते हैं कि– **"कवचं कवचरूपं स्यात्"**– अपने इष्ट-देवता का कवच-पाठ करना ही कवच पहनना है। वास्तव में कवच एक रक्षा उपकरण होता है जो योद्धा (साधक) को आयुधों के आघातों से रक्षा करने में अति सहायक सिद्ध होता है। साधक द्वारा अपने इष्ट-देवता का कवच-पाठ अदृष्ट आसुरी शक्तियों से रक्षा

करने के साथ-साथ अनेकानेक रूप से सिद्धिदायक भी होता है। इसलिए कहा गया है कि– **"पठित्वा धारयित्वा तु त्रैलोक्ये विजयी भवेत्।"** इसके अतिरिक्त **"सारूप्यं कवचाख्यं"** अर्थात् कवच से देवता का सारूप्य प्राप्त होता है। कवच स्तोत्र सदैव साधक के साथ सहचर बनकर रहे **"स्तोत्र सहचरो भवेत्"** अर्थात् उसका सदैव पाठ होता रहे तो इससे हमें अपने इष्टदेव का सायुज्य प्राप्त होगा।

अतः यह स्पष्ट हो जाता है कि **"पठनाद् धारणादस्य पूजनात् वांछितं लभेत्"** अर्थात् कवच का पाठ करने से बाह्य अदृश्य आसुरी शक्तियों से रक्षा होने के साथ-साथ वांछित फल भी प्राप्त होते हैं। इसीलिए पूजन अथवा साधना-क्रम में कवच-पाठ अतीव आवश्यक अंग है। इसी क्रम में यहां भगवती धूमावती के विशिष्ट कवच का उल्लेख किया जा रहा है।

।। प्रमाणीकरण की आवश्यकता ।।

साधकों को मेरा परामर्श है कि धूमावती एक तीव्र विद्या है, अतः पुस्तक से पढ़कर प्रयोगों का सम्पादन, साधक के लिए अनिष्टकारक हो सकता है। पुस्तक में पढ़ें, यह एक अच्छी बात है, लेकिन जब तक पुस्तकीय विधान को अपने सद्गुरु से प्रमाणित न करा लें तब तक उस प्रयोग को करने की भूल कदापि न करें। इस कवच के माध्यम से काफी प्रयोग सम्पादित किये जाते हैं, जो गुरुमुख से ज्ञात करना ही उत्तम एवं आवश्यक है।

Shri Yogeshwaranand Ji & Sumit Girdharwal Ji
Mob - 9410030994, 9917325788
Email : shaktisadhna@yahoo.com , Web : www.yogeshwaranand.org

श्री पार्वत्युवाच–

धूमावत्यर्चनं शंभो श्रुतं विस्तारतो मया।
कवचं श्रोतुमिच्छामि तस्या देव वदस्व मे॥१॥

श्री भैरव उवाच–

शृणु देवि परंगुह्यन्न प्रकाश्यं - कलौ युगे।
कवचं धूमावत्याश्शत्रुनिग्रह कारकम्॥२॥
ब्रह्माद्या देवि सततं यद्वशादरिघातिनः।
योगिनोऽभवन्छत्रुघ्ना यस्या ध्यानप्रभावतः॥३॥

विनियोग– ॐ अस्य श्री धूमावती-कवचस्य पिप्पलाद ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्री धूमावती देवता, धूं बीजं, स्वाहा शक्तिः, धूमावती कीलकं, शत्रुहनने पाठे विनियोगः।

॥ कवच-पाठ ॥

ॐ धूं बीजं मे शिरः पातु धूं ललाटं सदाऽवतु।
धूमा नेत्र युगम्पातु वती कर्णो सदाऽवतु॥
दीर्घा तूदर-मध्ये तु नाभिम्भे मलिनाम्बरा।
शूर्प्प-हस्ता पातु गुह्यं रूक्षा रक्षतु जानुनी॥
मुखम्मे पातु भीमाख्या स्वाहारक्षतु नासिकाम्।
सर्व्वा विद्याऽवतु कण्ठं विवर्णा बाहुयुग्मकम्॥
चंचला हृदयं पातु दुष्टा पार्श्व - सदाऽवतु।
धूमहस्ता सदा पातु पादौ पातु भयावहा॥

Shri Yogeshwaranand Ji & Sumit Girdharwal Ji
Mob - 9410030994, 9917325788
Email : shaktisadhna@yahoo.com , Web : www.yogeshwaranand.org

प्रवृद्ध - रोमा तु भृशंकुटिला कुटिलेक्षणा।
क्षुत्पिपासार्दि्दता देवी भयदा कलहप्रिया।।
सर्वांगम्पातु मे देवी सर्व - शत्रु विनाशिनी।
इति ते कवचं-पुण्यं-कथितं भुवि दुर्लभम्।।
न प्रकाश्यन्न प्रकाश्यन्न प्रकाश्यं कलौयुगे।
पठनीयं महादेवि त्रिसन्ध्यन्ध्यान तत्परैः।।
दुष्टाभिचारो देवेशि तद्गात्रन्नैव संस्पृन्नशेत्।।
(इति भैरवी-भैरव सम्वादे धूमावतीतत्वे धूमावती कवचं सम्पूर्णम्)

Shri Yogeshwaranand Ji & Sumit Girdharwal Ji
Mob - 9410030994, 9917325788
Email : shaktisadhna@yahoo.com , Web : www.yogeshwaranand.org

This Dhumavati kavach is taken from the upcoming book - Sri Dhumavati Sadhana Aur Siddhi written by Sri Yogeshwaranand Ji & Sumit Girdharwal Ji.

Books Written By Sri Yogeshwaranand Ji & Sumit Girdharwal Ji

1. Mahavidya Sri Baglamukhi Sadhana Aur Siddhi - Rs 250/=
2. Baglamukhi Tantram - Rs 300/=
3. Sri Pratyangira Sadhana Rahasya - Rs 320/=
4. Agama Rahasya - Rs 400/=
5. Shatkarm Vidhaan - Rs 280/=
6. Kamakhya Sadhana Rahasya - Rs 360/=
7. Shodashi Mahavidya (Tripurasundari Sadhana and Yantra Pooja) Rs 270/=
8. Mantra Sadhana - Rs 180/=
9. Yantra Sadhana - Rs 300/=

You can order books online www.asthaprakashan.com or you deposit respective amount in below account -
Astha Prakashan Mandir
Axis Bank. 917020072807944 (Current Account)
IFSC Code – UTIB0001094.
You can also pay via paytm – 9540674788

Dear readers! Very soon we are going to start a free of Cost E-mail based monthly magazine related to tantras, mantras and yantras including practical uses for human welfare. It will be delivered to you in pdf format to your email id which you can read on any device and you can also take its print out. Please make registered to yourself and your friends. For registration email us at shaktisadhna@yahoo.com or sumitgirdharwal@yahoo.com . For more information visit us www.yogeshwaranand.org